https://shikshabodh.in/

SHIKSHA BODH

ISSN: 3139-5880
VOLUME-1|ISSUE-2|April-June,2026

रूस-यूक्रेन संघर्ष: भारतीय परिप्रेक्ष्य

डॉ०शिवेश प्रसाद राय
असिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान) विभाग
अमरनाथ मिश्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय दुबेछपरा, बलिया
ईमेल- shiveshrai73@gmail-com
सम्पर्क नं०-9450725750

सारांश

रूस-यूक्रेन युद्ध ने यूरोप की सुरक्षा, वैश्विक अर्थव्यवस्था, ऊर्जा एवं खाद्य सुरक्षा तथा अंतरराष्ट्रीय भू-राजनीति को गहराई से प्रभावित किया है। युद्ध के कारण मानवीय संकट, विस्थापन, बुनियादी ढाँचे का विनाश, मुद्रास्फीति और आपूर्ति-श्रृंखला में व्यवधान बढ़े हैं। भारत के लिए यह संघर्ष विशेष रूप से जटिल है क्योंकि उसके रूस के साथ लंबे समय से रक्षा और ऊर्जा संबंध हैं, जबकि वह अमेरिका तथा यूरोपीय देशों के साथ भी अपने रणनीतिक संबंध मजबूत कर रहा है। भारत ने रूस के साथ संबंध बनाए रखते हुए अपनी रक्षा-आयात निर्भरता कम करने और अमेरिका, फ्रांस, इजराइल, जापान आदि के साथ सहयोग बढ़ाने का प्रयास किया है।

ऊर्जा क्षेत्र में भारत ने रूसी तेल को अल्पकालिक विकल्प के रूप में अपनाया, लेकिन दीर्घकालिक दृष्टि से आयात स्रोतों में विविधता लाने की आवश्यकता महसूस की। ब्राजील, कोलंबिया, कनाडा आदि से तेल प्राप्त करने तथा घरेलू गैस खोज को बढ़ाने के प्रयास इसी रणनीति का हिस्सा हैं। युद्ध ने भारत के यूरोपीय संबंधों को भी नए अवसर दिए हैं। यूरोपीय संघ के साथ व्यापार, प्रौद्योगिकी, डिजिटल क्षेत्र, हरित ऊर्जा और लचीली आपूर्ति-श्रृंखला में सहयोग बढ़ा है। फ्रांस और जर्मनी सहित कई यूरोपीय देशों के साथ भारत के राजनीतिक एवं रक्षा संबंध भी मजबूत हुए हैं।

भारत को रूस-चीन की बढ़ती निकटता तथा चीन और पाकिस्तान से जुड़े अपने सुरक्षा हितों के कारण सावधानीपूर्वक संतुलन बनाना होगा। साथ ही, यूक्रेन के पुनर्निर्माण में भारत एक विश्वसनीय भागीदार की भूमिका निभा सकता है और बहुपक्षीय संस्थाओं के माध्यम से सहयोग बढ़ा सकता है।

निष्कर्षतः- रूस-यूक्रेन युद्ध ने भारत के सामने चुनौती के साथ-साथ रणनीतिक अवसर भी पैदा किए हैं। भारत की विदेश नीति मुख्यतः राष्ट्रीय हित, रणनीतिक स्वायत्तता, ऊर्जा सुरक्षा, रक्षा-विविधीकरण और बहुपक्षीय सहयोग पर आधारित संतुलित दृष्टिकोण अपनाती दिखाई देती है।

मुख्य शब्द:- विदेश नीति, राष्ट्रहित, रक्षा, उर्जा, सुरक्षा, विविधीकरण, संतुलन और समाधान

प्रस्तावना -यूक्रेन पर रूसी आक्रामकता ने 1939-1942 के द्वितीय वैश्विक युद्धोपरान्त यूरोपीय परिक्षेत्र में सम्प्रति सबसे बदतर युद्ध की स्थिति को जन्म दिया। जो लगभग 3 वर्ष से अधिक अवधि को पार कर चुका है। इससे हमारी वैश्विक अर्थव्यवस्था, भू-राजनीतिक एवं मानवीय समस्याओं में आमूल-चूल परिवर्तन एवं इससे इतर विभिन्न प्रतिकूल परिस्थितियाँ आकार लेती जा रही हैं। इससे पूर्व कोविड-19 के भयंकर दुष्परिणाम से पूर्णतया उबर ही नहीं पाये थे कि यह भयावह यौद्धिक स्थिति आ खड़ी हो गयी। पश्चिमी देशों के साथ, रूस का भू-राजनीतिक संघर्ष एक महत्वपूर्ण पक्ष है। चीन, ईरान और उत्तर कोरिया जैसे सत्तासीन देशों के सहयोग के साथ-साथ रूस ने भारत के साथ अपने प्राचीनतम सम्बन्धों को यथास्थिति बनाये रखा, जबकि भारत एक बड़े लोकतान्त्रिक देश के साथ-साथ पश्चिमी देशों का सहयोगी भी है। प्रस्तुत सन्दर्भ में, रूस और भारत के मध्य आपसी सम्बन्धों पर यौद्धिक विभीषिका का कैसा प्रभाव होगा? यूरोपीय संवाद के भारतीय प्रयासों को किस प्रकार देखा जायेगा और क्या भारत, चाइना के साथ यूरोप के विकर्षण का लाभ ले पायेगा आदि-आदि?

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के 'बिना उकसावे और अनुचित' पूर्ण पैमाने पर भूमि, समुद्र और हवाई हमलों ने न केवल यूक्रेन की क्षेत्रीय अखण्डता और सम्प्रभुता का उल्लंघन किया है, वरन संयुक्त राष्ट्र घिन्द का भी उल्लंघन किया है। [1] इस प्रक्रिया के माध्यम से

विपुल मात्रा में जन-धन की क्षति हुयी है। अवर संरचनायें ध्वस्त हुयी हैं, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, आपूर्ति की कड़ियों को भारी क्षति का सामना करना पड़ा है। लोकतंत्र बनाम निरंकुशता के सम्बन्ध में अबाध वृद्धि के साथ-साथ वैश्विक दक्षिण और पश्चिम के मध्य विभक्त होने के कारण वैश्विक व्यवस्था ही अस्थिर हो गयी है। यूक्रेनी 'विशिष्ट सैन्याभ्यास' के आठ महीनों के उपरान्त, वैश्विक आर्थिक, भू-राजनीतिक और मानवीय संकटों पर व्यय, कोविड-19 का पूर्व प्रभाव आदि निरंतर बढ़ता जा रहा है।

दूसरे विश्व-युद्ध के उपरान्त यूरोप में दर्शित विघटनकारी संघर्षों में से यह एक है। यदि रूस इस संघर्ष को दीर्घकाल तक ले जाता है तो युद्ध की मानवीय एवं भौतिक कीमतें बढ़ती जायेंगी। पुतिन ने द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात सार्वजनिक लामबंदी का आदेश जारी कर इसे बढ़ाया है। [(2)] भविष्यमें परमाणु विकल्पों के बारे में चेतावनी दी है, खतरे को 'धोखा नहीं' कहते हुए[(3)] साथ ही ये रणनीति आंशिक रूप से महत्वपूर्ण रूसी सैन्य हताहतों और यूक्रेन के सफल सैन्य जवाबी हमले को कवर करने के उद्देश्य से हैं, लेकिन बड़े पैमाने पर एक राजनीतिक कदम है जो युद्ध से थके हुए यूरोप को भुनाने के लिए है, जो उच्चमुद्रास्फीति और ऊर्जा संकट से जूझ रहा है, और अगर बातचीत शुरू होती है तो ऊपरी हाथ हासिल करना है। [(4)]

विशिष्ट रूप से, पश्चिम के विरुद्ध रूस के भू-राजनीतिक युद्ध का एक विशिष्ट पक्ष वैश्विक दक्षिण में समर्थन के विविध स्तरों में वृद्धि अथवा मौन साधे रखने की इसकी रही है। [(5)] उदाहरणार्थ, रूस न केवल चीन, ईरान और उत्तर कोरिया के सत्तावादी राज्यों या ब्रिक्स (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका) और संघायी सहयोग संगठन (एस सी ओ) जैसे चीन प्रभुत्व वाले ब्लाकों के साथ बल्कि भारत दुनिया के सबसे बड़े लोकतन्त्र के साथ भी अपना तालमेल बनाये रखने में कामयाब रहा है। इसके नेपथ्य में कई कारण भी हैं। इसमें विकसित बनाम विकासशील दुनियाँ में विभक्त होने के अवसर का लाभ उठाकर रूसी प्रचार नेटवर्क का प्रभावी उपयोग गुटनिरपेक्षता की और ऐतिहासिक झुकाव, और खाद्यान्नों पर महत्वपूर्ण रूप से रूसी ऊर्जा, हथियारों और खाद्यान्नों पर लम्बे समय से आ रहे संबंधों और निर्भरता के कारण, राष्ट्रीय हितों की हठधर्मिता शामिल है। [(6)]

मानवीय, आर्थिक और राजनीतिक प्रतिफल: एक झलक:

(1) युद्ध महत्वपूर्ण आधारिक संरचना को लक्ष्य बनाने वाले साइबर हमलों की दर में वृद्धि कर रहा है और साथ ही राज्य प्रायोजित हाइब्रिड युद्ध में तकनीकी नवप्रवर्तन को भी बढ़ा है, जिससे भावी संघर्ष प्रभावित होंगे। [(7)]

(2) आर्थिक सहयोग और विकास संगठन के अनुसार, युद्ध से वैश्विक अर्थव्यवस्था को लगभग 2.8 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की क्षति होगी।

(3) बढ़ती मुद्रास्फीति, खाद्यान्नों की कमी और ऊर्जा तथा खाद्यान्नों की कीमतों में तीव्र वृद्धि, तथा बाधित आपूर्ति श्रृंखलाओं ने घरेलू खर्च को कमजोर कर दिया है तथा न केवल यूरोप में, बल्कि वैश्विक बाजारों को भी नुकसान पहुँचाया है।

(4) महत्वपूर्ण बुनियादीढाँचे (जैसे नार्ड स्ट्रीम पाइपलाइनों) के विरुद्ध तोड़-फोड़की गतिविधियों ने यूरोप की ऊर्जा, यूरोप की ऊर्जा और आर्थिक संकटों को बढ़ा दिया है, इसके अलावा महत्वपूर्ण प्रणालियों की कमजोरियों के कारण संभावित सुरक्षा निहितार्थ भी है।

(5) अक्टूबर के मध्य तक, मानवाधिकार उच्च आयुक्त कार्यालय ने 15,908 नागरिक हताहतों को दर्ज किया, हालांकि वास्तविक आँकड़ा काफी अधिक हो सकता है। [(8)]

(6) लगभग 14 मिलियन लोग विस्थापित हो गये हैं और यूक्रेन में जल्द ही गरीबी में 'स्वतन्त्र रूप से गिरने' की चेतावनी दी गयी है। [(9)]

(7) खाद्यान्न और उर्वरक कमी के कारण, अविकसित देशों की कमजोर आबादी, जो पहले से ही जलवायु परिवर्तन, सूखे या अस्थिरता से बुरी तरह प्रभावित है, सबसे अधिक प्रभावित है।

(8) जापोरिज्जिया परमाणु ऊर्जा संयंत्र जैसे परमाणु स्थलों पर या उसके आस-पास के हमलों के विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं।

(9) यूक्रेन पर स्वतन्त्र अन्तर्राष्ट्रीय जाँच आयोग ने निष्कर्ष निकाला है कि यूक्रेन में युद्ध अपराधों के साथ-साथ मानवाधिकारों और अन्तर्राष्ट्रीय मानवीय कानून का उल्लंघन किया गया है। [(10)]

(10) प्रमुख देशों में रक्षा निधि में वृद्धि होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। क्योंकि यह न केवल रूस बल्कि चीन के विरुद्ध भी एक निवारक उपाय हैकृ अमेरिका, जापान, फ्रांस और जर्मनी ने पहले ही बजट बढ़ा दिया है। [(11)] इसने इंडो-[(12)]पैसिफिक में हथियारों की दौड़की चिंताओं को मजबूत किया है, खासकर 20वीं कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ चाइना, कांग्रेस के बाद जिसमें सी जिनपिंग के रिकॉर्ड, राज्याभिषेक और वफादारी पदोन्नति ने इस क्षेत्र के भाग्य को सील कर दिया है।

रूस, भारत-चीन की स्थैतिक प्रासंगिकता:- यूक्रेन युद्ध में रूस को भारत और चाइना का मौन धारण व्यापक स्तर पर अप्रभावी रूस-भारत-चीन त्रिपक्षीय पर ध्यान आकृष्ट किया। [(13)] चीन-रूस फरवरी के संयुक्त बयान में क्षेत्रीय मंचों के भीतर बातचीत को मजबूत

करने के लिए अपने बहुपक्षीय नीति एजेंडे में हिस्से के रूप में तीनों (भारत, रूस, चीन) को शामिल किया गया जिसने रूस और चीन दोनों के लिए इसके महत्त्व को दोहराया गया। [14]

यद्यपि चीन और भारत की, स्पष्ट शत्रुता के कारण रूस भारतदृचीन के माध्यम से सहयोग को अग्रसर करने में स्पष्ट रुचि नहीं रखते परन्तु वैश्विक व्यवस्था के परिवर्तन की चीन की 'नये युग' की योजना और पश्चिम की इंडों पैसिफिक रणनीति में भारत की प्रमुखता ने इस प्रारूप में रुचि का पुनर्जागृत कर दिया है। चतुर्भुज चीन के यकायक पुनर्जीवित होने की संभावना नहीं है, लेकिन सुरक्षा वार्ता (क्वाड) की तरह रूस-भारत नियमित उच्चस्तरीय आधिकारिक ब्रीफिंग के माध्यम से आगे बढ़ना जारी रखेगा।

रक्षा आयात में परिमार्जन:- स्वयं भारत रूस पर निर्भरता को घटाने हेतु अपने हथियार आयात स्रोतों में विविधता ला रहा है, जो 2000-2020 के मध्य भारत के हथियार आयात का 66.5 था। सम्प्रति भारत रूस में निर्मित या डिजाइन किये गये उपकरणों पर बहुत अधिक निर्भर है। पनडुब्बियों से लड़ाकू विमान तक[15] भारत सरकार की 'मेक इन इण्डिया' के अन्तर्गत ए०के०- 203 असॉल्ट राइफलों के संयुक्त निर्माण हेतु रूस के साहचर्य से 681 मिलियन अमेरिकी डॉलर का समझौता किया है[16] और 10 वर्षीय अवधि हेतु एक और परमाणु ऊर्जा चालित हमला पनडुब्बी (चक्र) को पट्टे पर लेने हेतु 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर कापैक्ट हुआ है। 2025 तक इसके निर्गमन की आशा है। [17] भारत को पूर्व से ही रूस के साथ 5 बिलियन अमेरिकी डॉलर के हथियार सम्बन्धित सौदे के अनुरूप 5 रूसी निर्मित एस 400 वायुरक्षा प्रणालियों की पहली यूनिट प्राप्त हो चुकी है। [18] पुनश्च पिछले कुछ वर्षों में रूस की जटिल और लम्बी क्रय प्रक्रियाओं(19) भारत के विविधीकरण प्रयासों से लाभ उठाने की संभावनाओं को कम करने एवं स्वयं के प्रमुख हथियारों का उत्पादन करने की महत्वाकांक्षी आत्मनिर्भरता योजनाओं के कारण रूस से आयात में कुल मिलाकर गिरावट आयी है। परिणामतः अमेरिका[20] जापान[21] इजराइल, आस्ट्रेलिया, वियतनाम[22] और फ्रांस जैसे कई भागीदारों के साथ रक्षा सौदों को प्रारम्भ किया है।

भारत के स्वदेशी एवं डिजिटलीकरण के प्रयासों के मध्य प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को 74 प्रतिशत स्वचालित मार्ग और 100 प्रतिशत सरकारी मार्ग द्वारा खोल दिया है। [23] भारत उन सभी साझेदारों को महत्व प्रदान करेगा जो आधुनिक तकनीक में सिद्धहस्त हैं।

तेल वाणिज्य में विविधीकरण:- युद्ध के लम्बी अवधि तक चलने के कारण अन्ततोगत्वा भारत पर इसका आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव प्रतिकूल ही पड़ेगा। रूसी तेल व्यापार में उछाल भारत की लम्बी आवश्यकताओं हेतु अल्पकालिक हल है। [24] शक्तिशाली पश्चिमी प्रतिबंध भारतीय विकल्पों को कम कर देगा, जबकि भारत एक उभरती, जिम्मेदार शक्ति है। नैतिक जिम्मेदारी भी उसके लिए एक यक्ष प्रश्न है। सम्प्रति भारत रूसी समकक्षों से ऊर्जा उद्योग के गठजोड़को प्रभावित करने वाले कारणों को लेकर चिंतनशील है जैसे- व्छळब्ए विदेश, भारत पेट्रोरिसोर्सेज, इंडियन ऑयल कारपोरेशन और ऑयल इण्डिया जैसी भारतीय सरकारी स्वामित्व वाली फर्मों ने रूस में 16 बिलियन अमेरिकी डॉलर का विनियोग किया है, जिसमें सुदूर पूर्व और पूर्वी साइबेरिया भी सम्मिलित है। आयात प्रतिबंध से भावी नकदी प्रवाह सृजन क्षमता को धक्का लग सकता है। [25]

चीन के साथ रूस के बढ़ते सम्बन्धों तथा चीन और पाकिस्तान दोनों के साथ पूर्व से चले आ रहे सीमा विवाद पर भारत को सतर्क दृष्टि रखनी होगी। भू-राजनीतिक दृष्टिकोण से पाकिस्तान के साथ वाशिंगटन के 450 मिलियन अमेरिकी डॉलर के एफ-16 लड़ाकू जेट सौदे ने मामले को और भी गंभीर बना दिया है। [26] अमेरिकी नेतृत्व वाले तेल कैम्प गठबंधन में सम्मिलित होने का निर्णय क्षेत्रीय भूदृराजनीति के साथ-साथ मूल्य कैम्प समर्थक राज्यों को तेल आपूर्ति रद्द करने के रूस की चेतावनी से प्रभावी होकर कीमतों में वृद्धि करेगा।

अतिरिक्त इसके भारत के अग्रिम स्टेप्स, पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (ओपेक) और रूस तथा उसके सहयोगियों के निर्णय से प्रभावित होगा। कीमतों में वृद्धि हेतु तेल उत्पादन में 2 बैरल (मिलियन) प्रतिदिन की कटौती सम्मिलित होगी। [27] इस स्टेप्स को अमेरिका द्वारा अदूरदर्शी बताया गया। रूस के सहयोगियों रूस समेत मिलीभगत का आरोप लगाया गया है। भारत ओपेक के इस कटौती को ब्लॉक के 'संप्रभु निर्णय के रूप में स्वीकार। [28]

इस विघटन कारी स्थिति को देखकर भारत अपनी ईंधन आवश्यकताओं का लगभग 85 प्रतिशत आयात करता है, युद्ध से उत्पन्न उसी सुरक्षा संकट के उपरान्त कच्चे तेल आयात स्रोतों जैसे- ब्राजील गुयाना, कोलंबिया और कनाडा को विकल्प के रूप में) विविधता लाने के लिए अपने प्रयास को तीव्र कर दिया है। इसको मद्देनजर रखते हुए कोलंबिया और ब्राजील के साथ लम्बी अवधि हेतु समझौते पर हस्ताक्षर कर दिया और गैस के सम्बन्ध में घरेलू खोज जारी हैं। भारत के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव की संभावना-यद्यापि यह सत्य है कि रूस के साथ भारत के बेझिझक तेल एवं हथियार व्यापार ने पश्चिमी रणनीतिक क्षेत्र में व्यापक चिंता को जन्म दिया है। भारतीय लोकतांत्रिक मूल्य, संयुक्त राष्ट्र में यूक्रेनी राष्ट्रपति की भागीदारी के पक्ष में समर्थन अर्थात रूस के विपक्ष में वोटिंग[29] युद्ध नैतिकता पर

रूस के लिए मोदी द्वारा उठाये गये प्रश्न, इस पर यूरोप की सकारात्मक प्रतिक्रिया। युद्ध के मध्य यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन की आशावादी भारतीय यात्रा, जिसने रक्षा, उभरती हुई तकनीक, व्यापार और हरित ऊर्जा सहित सहयोग के क्षेत्र को विस्तार दिया, ने पश्चिमी मीडिया में दिखाये गये द्विपक्षीय संबंधों को सशक्त बनाया।

ईयू-भारत व्यापार और प्रौद्योगिकी परिषद (टीटीसी) का प्रागिवेश, भारत के लिए प्रथम टीटीसी होने के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके कारण लचीली आपूर्ति श्रृंखला, डिजिटलीकरण, जलवायु क्रियान्वयन और वैश्विक स्वास्थ्य आदि कई प्रकार की समस्याओं में रणनीतिक, जुड़ाव को और घनिष्ट करने में सहायता मिली। ईयू-भारत युक्त व्यापार समझौता निरंतर अग्रसर है। अतिरिक्त इसके, फ्रांस और जर्मनी जैसे सदस्य देशों के साथ राजनीतिक और रक्षा सम्बन्धों को गति मिली है। कई यूरोपीय राज्यों के साथ भारत की ठोस पहुँच भले ही युद्ध के प्रारम्भिक दौर में मोदी की टेलीफोनिक वार्ता रही हो अथवा 2022 के मध्य तीन देशों की यात्रा तथा नॉर्डिक शिखर सम्मेलन ने व्यावहारिक और विकासात्मक सहयोग से सार्वभौमिक मूल्य आधारित बातचीत को अधिकतम करने के भारत के दृष्टिकोण की ओर इशारा किया है।

चीन पर धीरे-धीरे तनाव कम करने के लिए समीप आना एक और प्रगति मान सकते हैं। प्रतिद्वन्दी, भागीदार और प्रतियोगी के रूप में चीन के प्रति यूरोपीय संघ की वर्तमान आधिकारिक नीति के अलावा यूरोपीय संघ चीन से सतर्कतापूर्वक दूरी बना रहा है। रूस के साथ उसके घनिष्ठ संबंध हैं। एक अंतर्मुखी चीनी अर्थव्यवस्था, विशेषतः सी सी पी 20वीं कांग्रेस की दावा में जिसने सभी पार्टी-राज्य नीति मामलों पर शी की वैचारिक पकड़को सुदृढ़किया है। भारत द्वारा यूक्रेन को आवश्यक दवाओं और उपकरणों को मानवीय सहायता के तौर पर उपलब्ध कराया गया है।

आशा और पूर्ण विश्वास है कि भारत यूक्रेन युद्ध के पश्चात रिकवरी प्लानिंग प्रक्रिया पूर्व से ही प्रारम्भ हो चुकी है। यद्यापि पुनर्निर्माण का दायरा और उसकी लागत दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। सितम्बर तक यूरोपीय आयोग ने अन्य हिस्सेदारों से मिलकर यूक्रेन के पुनर्निर्माण और पुनर्प्राप्ति की लागत का अनुमान 349 बिलियन डॉलर (अमेरिकी) लगाया था। एशिया में भारत इस वृहद कार्य में विश्वसनीयभागीदार होगा।

यूक्रेनको युद्धोपरान्त भारत को लोकतांत्रिक प्रक्रिया के सुदृढ़ीकरण हेतु बहुपक्षीय संस्थाओं के माध्यम से संयुक्त रूप से कार्य करना चाहिए।

निष्कर्षतः क्या भारत-जिसके पास चीन जैसी शक्ति और संसाधन उपलब्ध नही है। चीनी क्षति की आपूर्ति करने तथा भावी सच्चे साझेदार के सच्चे साझेदार के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करने में समर्थ है। यह भारत एवं अपनी आर्थिक संवृद्धि को कैश करने की सामर्थ्य पर आश्रित है। यूक्रेनी युद्ध के अन्तर्गत भू-राजनीतिक गतिशीलता में इसकी बढ़ती केंद्रीयता आश्रित करेगा। पश्चिमी उदासीनता या यूरोपीय औपनिवेशिक अतीत के मध्य रूस के ऐतिहासिक स्वरूप से भारत के शक्तिशाली समर्थन पर आधारित कड़े और रक्षात्मक दृष्टिकोण जो प्रायः इस वर्ष भारतीय कूटनीति हेतु संदर्भ बिंदु बन गया है। भारतीय विदेशनीति वास्तविक राजनीति के रुख में मुखर होगी जिसमें देश हित एवं शक्ति प्रदर्शन उपदेशात्मक विचारों पर प्रभावी है।

सन्दर्भः-

(1) व्हाइट हाउस, 'रूस के यूक्रेन पर अकारण और अनुचित हमले पर राष्ट्रपति बाइडेन की टिप्पणी' 24 फरवरी, 2022, htt://bitly-ws/wq6u

(2) मार्क एफ. कैनसियन, 'रूस की आंशिक लामबन्दी क्या मतलब है?' सामरिक और अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन केन्द्र, 26 सितम्बर 2022, https://www-csis-org/analysis/what&does&russia&Partial&mobilization&mean

(3) केटी बो लिलीज और नताशा वट्रेड'अमेरिका का मानना है कि पुतिन द्वारा परमाणु हथियार का इस्तेमाल किये जाने की संभावना कम है, लेकिन खतरा बढ़गया है,' सी एन एन, 28 सितम्बर, 2022,

(4) मार्क एफ, कैनसियन, रूस की 'आंशिक लामबन्दी' का क्या मतलब है?

(5) मिशेल डुक्लोस, 'यूक्रेनः क्या ग्लोबल साउथ रूस को छोड़सकता है?' इंस्टीट्यूट मोंटेन, 30 सितम्बर,2022 https://www-institutaigne-rg/en/analysis/Ukraine&can&global&South&give&russia-

(6) 'रूस कैसे वैश्विक दक्षिण पर जीत हासिल करने की कोशिश कर रहा है,' द इकोनामिस्ट, 22 सितम्बर, 2022

https://www-economistcom/international/2022/ 09/22/how-russia is-trying-to win over the

global-south.

(7)एमिली हार्डिंग, 'यूक्रेन में छिपा युद्ध, 'सामरिक और अन्तर्राष्ट्रीय, अध्ययन केन्द्र, 15 जून, 2022, https://www-csis-org/analysis/hidden-war-ukraine-

(8) संयुक्त राष्ट्र, 'यूक्रेनः नागरिक हताहत अद्यतन 10 अक्टूबर 2022', संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त कार्यालय, 10

(9) संयुक्त राष्ट्र, 'यूक्रेन युद्ध' बुनियादी ढाँचे को 100 बिलियन डॉलर का नुकसान, और बढ़ता जा रहा है, 'यू एन न्यूज, 16 मार्च, 2022, https://news-un-org/en/story/2022 /03/01/2022

(10) यूरोपीय संघ, 'जापोरिज्जिया परमाणु ऊर्जा रूस संयंत्र की स्थिति पर यूक्रेन संयुक्त वक्तव्य, बाहरी कार्यवाही, 14 अगस्त, 2022, htt://bitly-ws/wq98

(11) शैनन बुगोस, 'बाइडेन ने Onl oglent story 12022/03/01/12/in-;wft; hte: //bitly-/w998 1 'kSuu cqxks1] ""ckbMsu 1 शैनन बुगो1, ष्ष्बाइडेन ने रक्षा बजट में बिलियन डॉलर की बढ़ोत्तरी को मंजूरी दी, आर्म्स कंट्रोल एसोसिएशन, अप्रैल 2022 https://www-armscontentog/ork/2002-04/news/weldin approves- 29- brtlion-inevenne dstones baby

(12) विलियन माची, 'फ्रांसीसी 2023 रक्षा बजट में युद्ध अर्थव्यवस्था को नीति देने के लिए 8 बिलियन डॉलर जोड़े गये, डिफेंस न्यूज, 28 सितम्बर 2022 htt://btly-ws/wqa8-

(13) जगन्नाथ पांडा और यूथेल पाइक, यूक्रेन के बाद रूस-भारत-चीन त्रिपक्षीयः क्या बीजिंग नेतृत्व करेगा? चाइना ब्रीफ, 9 सितम्बर 2022 https://Jamestowon-org/ programin the rusahdiction trilateral after ukrene- will buying- take the leadf

(14) रूस के राष्ट्रपति, ''रूसी संघ और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना का संयुक्त वक्तव्य, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध एक नये युग में प्रवेश कर रहे हैं और वैश्विक सतत विकास,'' 4 फरवरी 2022, het 11 rupsupplement 15720-

(15) ललित के झा, भारतीय सेना रूस द्वारा आपूर्ति किये गये उपकरणों के बिना प्रभावी ढंग से काम नहीं कर सकतीः अमेरिकी रिपोर्ट, द प्रिंट, 27 अक्टूबर 2021 http: 11 bitly- ws/wge7-

(16) राहुल सिंह, 'भारत, रूस ने । A.K.-203 डील पूरी की, सैन्य सहयोग के लिए 10 साल के समझौते को नवीनीकृत किया, 'हिन्दुस्तान टाइम्स, 6 दिसम्बर 2021 htt://bitlyws/wqe8

(17) 'भारत ने तेल और गैस के उत्पादन में निवेश के लिए अमेरिकी फर्मों को मजबूत प्रस्ताव दिया,' मिन्ट, 02 अक्टूबर 2022 http://bitly] ws/wqg9

(18) 'रूस का कहना है कि उसने अमेरिका के दबाव के बावजूद भारत को समय पर एस 400 मिसाइल सिस्टम दिया, 'टाइम्स ऑफ इंडिया, 14 सितम्बर 2022, http://bitly&ws/wg10

(19) स्नेहाश एलेक्स फिलिप, 'रूस से दूसरे एस 400 स्क्वाड्रन की डिलीवरी युद्ध के कारण तीन महीने की देरी के लिए तैयार, सिमुलेटर आ गये, 'द प्रिंट 15 अप्रैल, 2022 http//Mbtly tÛ/wagz-